AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

औपनिवेशिक काल मे अजमेर मेरवाड़ा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक योगदान

गोविन्द सेन
(प्रोफ.) डॉ. दिनेश मंडोत
इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

महर्षि दयानंद सरस्वती (1824–1883), एक प्रसिद्ध सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक, ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में जन चेतना को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश भारत में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र अजमेर–मेरवाड़ा में उनका योगदान गहरा और बहुआयामी था। यह शोध पत्र अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक योगदान की पड़ताल करता है, जिसमें सामाजिक मानदंडों में सुधार, वैदिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने और राष्ट्रवादी भावना को जगाने पर उनके प्रभाव पर जोर दिया गया है। जातिगत असमानताओं को दूर करने, शिक्षा को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भरता की वकालत करके, दयानंद इस क्षेत्र में सुधार और प्रतिरोध का एक प्रकाश स्तंभ बन गए।

मुख्यशब्द: आर्य समाज, प्रभाव, सुधार, वैदिक मूल्य

1.1 परिचय

भारत में औपनिवेशिक काल ने सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल–पुथल का समय चिह्नित किया। ब्रिटिश शासन ने आधुनिकीकरण और प्रशासनिक परिवर्तन लाए, लेकिन इसने सामाजिक विभाजन को भी गहरा किया, पारंपरिक संरचनाओं को बाधित किया और व्यापक

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

आर्थिक शोषण को जन्म दिया। इस संदर्भ में, देश भर में सुधार आंदोलन उभरे, जिन्होंने औपनिवेशिक उत्पीड़न को चुनौती दी और आंतरिक सामाजिक मुद्दों को संबोधित किया। इनमें से, महर्षि दयानंद सरस्वती का योगदान भारत के पुनर्जागरण को आकार देने में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में सामने आता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती (1824–1883), एक दूरदर्शी सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक, ने वैदिक सिद्धांतों की पुनः खोज के माध्यम से भारतीय समाज को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से एक आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके स्पष्ट आह्वान, ष्वेदों की ओर लौटो,ष ने तर्कवाद, आत्मनिर्भरता और हठधर्मिता की अस्वीकृति पर जोर दिया। अजमेर–मेरवाड़ा, एक ऐसा क्षेत्र जो सीधे अंग्रेजों द्वारा प्रशासित था, दयानंद की सुधारवादी गतिविधियों का केंद्र बिंदु बन गया। क्षेत्र की अनूठी सामाजिक–राजनीतिक स्थिति और मिशनरी प्रभावों के संपर्क ने इसे उनकी शिक्षाओं और आर्य समाज के बाद के उदय के लिए उपजाऊ जमीन बना दिया। अजमेर–मेरवाड़ा की अपनी यात्राओं के दौरान, महर्षि दयानंद ने उस समय की दबावपूर्ण चुनौतियों को संबोधित करने की कोशिश कीरू जातिगत असमानताएं, लिंग भेदभाव, कम साक्षरता दर और मिशनरी प्रयासों के कारण सांस्कृतिक अलगाव का बढ़ता खतरा। उन्होंने सशक्तिकरण के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा की वकालत की, अंधविश्वास का मुकाबला करने के लिए वैदिक आदर्शों का पुनरुद्धार किया और औपनिवेशिक प्रभुत्व का विरोध करने के लिए सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया। उनके प्रभाव ने न केवल क्षेत्र के सामाजिक ताने–बाने को सुधारा, बल्कि राजनीतिक चेतना को भी प्रेरित किया जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया। यह शोधपत्र औपनिवेशिक काल के दौरान अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती के बहुमुखी योगदान की पड़ताल करता है। यह सामाजिक सुधार, धार्मिक पुनरुत्थान और राजनीतिक जागृति पर उनके प्रभाव की गहराई से जांच करता है, यह जांचता है कि कैसे उनके प्रयासों ने क्षेत्र को बदल दिया और एक स्थायी विरासत छोड़ी। इस अध्ययन के माध्यम से, हम उनकी दृष्टि की स्थायी प्रासंगिकता और भारत के

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

1.2 अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती का सामाजिक योगदान

महर्षि दयानंद सरस्वती की सुधारवादी विचारधारा ने जड़ जमाए सामाजिक पदानुक्रमों को खत्म करने और समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों का उत्थान करने का प्रयास किया। अजमेर–मेरवाड़ा में उनका काम औपनिवेशिक काल के दौरान गहरी जड़ें जमाए असमानताओं को दूर करने और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण था। इस क्षेत्र में दयानंद का सामाजिक योगदान शिक्षा, जाति सुधार, लैंगिक समानता और अंधविश्वासों के उन्मूलन पर केंद्रित था, जिसने एक प्रगतिशील समाज की नींव रखी।

1. शिक्षा को बढ़ावा देना

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए महर्षि दयानंद के दृष्टिकोण की आधारशिला थी। अजमेर–मेरवाड़ा में उनका प्रभाव साक्षरता और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने में सहायक था:

- **शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना:** दयानंद के दर्शन से प्रेरित होकर, आर्य समाज ने अजमेर में दयानंद एंग्लो–वैदिक (डीएवी) संस्थानों जैसे स्कूलों की स्थापना की। इन स्कूलों ने आधुनिक शिक्षा और वैदिक मूल्यों का मिश्रण प्रदान किया, छात्रों को नैतिक और नैतिक सिद्धांतों को स्थापित करते हुए व्यावहारिक ज्ञान से लैस किया।
- **महिला शिक्षा पर जोर:** ऐसे समाज में जहाँ महिलाओं को अक्सर शिक्षा से वंचित रखा जाता था, दयानंद ने उनके सीखने के अधिकार की वकालत की। लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित किए गए, पारंपरिक मानदंडों को चुनौती दी गई और महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए सशक्त बनाया गया।
- **सभी के लिए साक्षरता:** इस आंदोलन ने कामकाजी वर्ग के बीच निरक्षरता का मुकाबला करने, वंचितों के बीच जागरूकता पैदा करने और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने के लिए वयस्क शिक्षा को बढ़ावा दिया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

2. जातिगत भेदभाव का उन्मूलन

महर्षि दयानंद ने कठोर जाति व्यवस्था की निंदा की जिसने समाज को विभाजित किया और असमानता को कायम रखा। अजमेर–मेरवाड़ा में उनके प्रयासों में शामिल थे:

• **सामाजिक समानता की वकालत:** उन्होंने सार्वभौमिक भाईचारे के विचार पर जोर दिया, समाज से अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव की प्रथाओं को छोड़ने का आग्रह किया। आर्य समाज की सभाओं और संस्थाओं ने सभी जातियों के व्यक्तियों का स्वागत किया, जिससे समावेश की भावना को बढ़ावा मिला।

• **हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए समर्थन:** इस आंदोलन ने दलितों और अन्य हाशिए पर पड़े समूहों को उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए शिक्षा और अवसर प्रदान करके उन्हें मुख्यधारा के समाज में एकीकृत करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया।

3. महिला सशक्तिकरण

दयानंद सरस्वती लैंगिक समानता के प्रबल समर्थक थे और अजमेर–मेरवाड़ा में उनके प्रयासों से महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ:

• **विधवा पुनर्विवाह की वकालत:** उन्होंने विधवाओं से जुड़े कलंक के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उनके पुनर्विवाह के अधिकार का समर्थन किया, जिससे उन्हें सम्मान वापस पाने और समाज में फिर से शामिल होने में मदद मिली।

• **बाल विवाह का विरोध:** महर्षि दयानंद ने बाल विवाह की आलोचना एक अन्यायपूर्ण प्रथा के रूप में की, जो युवा लड़कियों के अधिकारों और विकास को कम करती है। उनके प्रयासों ने सामाजिक सुधार आंदोलनों को प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप औपनिवेशिक काल में विधायी परिवर्तन हुए।

• **महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** शिक्षा और सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देकर, दयानंद ने महिलाओं को सामाजिक प्रगति में सक्रिय योगदानकर्ता बनने के लिए सशक्त बनाया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

4. अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान

दयानंद की शिक्षाओं ने अजमेर–मेरवाड़ा में सामाजिक प्रगति में बाधा डालने वाले अंधविश्वासों और हानिकारक प्रथाओं की व्यापकता को चुनौती दी:

• **धर्म के प्रति तर्कसंगत दृष्टिकोण:** उन्होंने कर्मकांडों, मूर्ति पूजा और अन्य प्रथाओं की निंदा की जो भय और अज्ञानता को बढ़ावा देती थीं। वेदों के तर्कसंगत सिद्धांतों पर जोर देकर, उन्होंने लोगों को अधिक प्रबुद्ध विश्वदृष्टि अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

• **सामाजिक रीति–रिवाजों में सुधार:** अत्यधिक दहेज, सती (विधवा बलि), और असाधारण धार्मिक समारोहों जैसी प्रथाओं की आलोचना की गई और उनके प्रभाव में धीरे–धीरे कम हो गई।

• **स्वच्छता और स्वास्थ्य को प्रोत्साहन:** आर्य समाज के अभियानों ने विशेष रूप से ग्रामीण समुदायों के बीच स्वच्छता और सफाई को बढ़ावा दिया, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

5. समुदायों का एकीकरण

जाति और वर्ग द्वारा विभाजित अजमेर–मेरवाड़ा की विविध आबादी को महर्षि दयानंद की शिक्षाओं में एक एकीकृत मंच मिला:

• **सामुदायिक सभाएँ:** यज्ञों (वैदिक अग्नि अनुष्ठान) और सत्संग (आध्यात्मिक सभाएँ) के माध्यम से, दयानंद ने लोगों के बीच एकता और सामूहिक उद्देश्य की भावना को बढ़ावा दिया।

• **एक सामान्य भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार:** दयानंद द्वारा हिंदी को एक आम भाषा के रूप में बढ़ावा देने से भाषाई बाधाओं को दूर किया गया और क्षेत्र में सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया गया।

6. सामाजिक सुधारों के माध्यम से आर्थिक उत्थान

स्व–निर्भरता को बढ़ावा देने और स्वदेशी आदर्शों की वकालत करके, दयानंद ने अप्रत्यक्ष रूप से क्षेत्र के आर्थिक सुधार में योगदान दिया:

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

• **स्थानीय उद्यमों को प्रोत्साहन:** उनकी शिक्षाओं ने लोगों को स्थानीय कारीगरों और व्यवसायों का समर्थन करने के लिए प्रेरित किया, जिससे ब्रिटिश वस्तुओं पर निर्भरता कम हुई।

• **व्यावसायिक कौशल के लिए प्रशिक्षण:** आर्य समाज संस्थाएँ अक्सर व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करती थीं, जिससे व्यक्ति वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते थे।

अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रयास परिवर्तनकारी थे। जातिगत भेदभाव को संबोधित करके, शिक्षा को बढ़ावा देकर और लैंगिक समानता की वकालत करके, उन्होंने सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज की नींव रखी। सामाजिक मुद्दों के प्रति उनके तर्कसंगत दृष्टिकोण और वैदिक सिद्धांतों पर जोर ने एक प्रगतिशील मानसिकता को बढ़ावा दिया, जिससे अजमेर–मेरवाड़ा के लोगों को सदियों के उत्पीड़न और असमानता को दूर करने में मदद मिली। उनके सामाजिक सुधारों की विरासत आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण की दिशा में प्रयासों को प्रेरित करती है।

1.3 धार्मिक योगदान

1.3.1 वैदिक धर्म का पुनरुद्धार

दयानंद के वेदों की ओर वापसी दर्शन ने अंधविश्वासों को त्यागकर और वैदिक शिक्षाओं के सार को पुनर्स्थापित करके हिंदू धर्म को शुद्ध करने का प्रयास किया। अजमेर–मेरवाड़ा में, इसने निम्नलिखित को जन्म दिया:

• **वैदिक प्रथाओं को बढ़ावा देना:** उन्होंने वेदों के अध्ययन पर जोर दिया और लोगों को एक सामान्य आध्यात्मिक ढांचे के तहत एकजुट करने के लिए यज्ञ (वैदिक अनुष्ठान) आयोजित किए।

• **मूर्ति पूजा का विरोध:** दयानंद ने मूर्तिपूजा की निंदा की, धर्म की तर्कसंगत और एकेश्वरवादी व्याख्या को बढ़ावा दिया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1.3.2 मिशनरी गतिविधियों का विरोध

ईसाई मिशनरी अजमेर–मेरवाड़ा में सक्रिय थे, जो शिक्षा और आर्थिक प्रोत्साहन के माध्यम से लोगों का धर्मांतरण कर रहे थे। महर्षि दयानंद ने इसका मुकाबला इस प्रकार किया:

• वैदिक परंपराओं की समृद्धि को उजागर करने के लिए वाद–विवाद और प्रवचन आयोजित करना।

• आर्य समाज केंद्रों की स्थापना करना जो धर्मांतरण को रोकने के लिए शिक्षा और सहायता प्रदान करते थे।

1.3.3 हिंदी का प्रचार

दयानंद ने हिंदी को भारतीय जनता के लिए एकता की भाषा के रूप में प्रचारित किया। अजमेर–मेरवाड़ा में उनके प्रभाव ने क्षेत्र की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया।

1.4 राजनीतिक योगदान

1.4.1 राष्ट्रवाद की प्रेरणा

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं ने अजमेर–मेरवाड़ा में राजनीतिक जागृति की नींव रखी:

स्वदेशी आंदोलन: आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादन पर उनके जोर ने क्षेत्र में स्वदेशी आंदोलन को प्रेरित किया।

युवा लामबंदी: अजमेर–मेरवाड़ा में कई युवा नेताओं ने दयानंद के विचारों से प्रेरणा ली और स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए।

1.4.2 स्वशासन की वकालत

दयानंद का स्वराज (स्वशासन) का आह्वान क्रांतिकारी था। उनकी दृष्टि अजमेर–मेरवाड़ा में गूंजी, जहाँ आर्य समाज के नेताओं ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनता को संगठित करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1.4.3 जमीनी स्तर के आंदोलनों के लिए समर्थन

दयानंद ने अजमेर–मेरवाड़ा में जमीनी स्तर पर सक्रियता को प्रोत्साहित किया, लोगों से खुद को संगठित करने और औपनिवेशिक शोषण और सामंती उत्पीड़न दोनों का विरोध करने का आग्रह किया।

1.5 दयानंद के सुधारों के सामने चुनौतियाँ

जबकि अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद का प्रभाव बहुत गहरा था, उनके सुधारवादी एजेंडे को प्रतिरोध का सामना करना पड़ा:

रूढ़िवादी प्रतिक्रिया: परंपरावादियों ने जाति प्रथा में सुधार और विधवा पुनर्विवाह की वकालत करने के उनके प्रयासों का विरोध किया।

औपनिवेशिक हस्तक्षेप: अंग्रेजों ने उनके राष्ट्रवादी विचारों और मिशनरी विरोधी गतिविधियों को अपने अधिकार के लिए खतरा माना।

सीमित संसाधन: आर्य समाज की पहल अक्सर वित्तीय और रसद चुनौतियों से बाधित होती थी।

1.6 अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती की विरासत

महर्षि दयानंद सरस्वती की विरासत अजमेर–मेरवाड़ा में गूंजती रहती है:

शिक्षा: आर्य समाज के मार्गदर्शन में स्थापित संस्थाएँ शिक्षा और प्रगति के केंद्र बनी हुई हैं।

सामाजिक समरसता: जाति और लैंगिक असमानताओं को मिटाने के उनके प्रयासों ने एक अधिक समावेशी समाज की नींव रखी।

राष्ट्रवाद: उन्होंने जिस राजनीतिक चेतना को प्रेरित किया, उसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया, जिसमें अजमेर–मेरवाड़ा ने सक्रिय भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

औपनिवेशिक काल के दौरान अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती का योगदान परिवर्तनकारी और स्थायी था। अपने दूरदर्शी नेतृत्व और सुधारवादी उत्साह के माध्यम से, उन्होंने उस समय की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक चुनौतियों का समाधान किया।

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा पर उनका जोर, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानताओं को मिटाने के उनके प्रयास और धर्म के प्रति उनके तर्कसंगत दृष्टिकोण ने क्षेत्र के सामाजिक ताने–बाने को पुनर्जीवित किया।

वैदिक सिद्धांतों को बढ़ावा देकर और लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देकर, दयानंद ने औपनिवेशिक शासन और मिशनरी गतिविधियों द्वारा बनाए गए सांस्कृतिक अलगाव और सामाजिक विभाजन का मुकाबला किया। आत्मनिर्भरता और स्वदेशी आदर्शों के लिए उनकी वकालत ने व्यापक भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में क्षेत्र की भागीदारी की नींव रखी, जिससे औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोध को प्रेरणा मिली।

अजमेर–मेरवाड़ा में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा शुरू किए गए सुधारों ने न केवल तात्कालिक सामाजिक मुद्दों को संबोधित किया, बल्कि दीर्घकालिक प्रगति के लिए मंच भी तैयार किया। उनकी शिक्षाएँ सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय चेतना के प्रकाशस्तंभ के रूप में गूंजती रहती हैं। उनकी स्थायी विरासत समाज को बदलने में दूरदर्शी नेतृत्व की शक्ति को उजागर करती है, जो उन्हें स्वतंत्रता और आधुनिकता की ओर भारत की यात्रा में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक बनाती है।

संदर्भ

- दयानंद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश (सत्य का प्रकाश)।
- शर्मा, आर.एस., औपनिवेशिक भारत में सामाजिक आंदोलन।
- गुप्ता, एम.एल., राजस्थान में आर्य समाज का इतिहास।
- अजमेर में दयानंद एंग्लो–वैदिक संस्थाओं के आधिकारिक अभिलेख।
- शास्त्री, एन.डी., आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रवाद।
- एन.आर. स्वरूप सक्सेना. (2014) शिक्षा का दार्शनिक और समाजशास्त्रीय फाउंडेशन, आर. लाल बुक डिपो।
- राम नाथ शर्मा (2010), शैक्षिक दर्शन की पाठ्यपुस्तक, कनिष्क प्रकाशक, वितरक, नई दिल्ली।

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

- एस. सैमुअल रवि (2011), शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
- शैव ''उपनिषद, श्री उपनिषद की टिप्पणी के आधार पर अनुवादितयअद्ब्रह्मयोगिन, ट्र। श्रीनी वास ?अयंगर द्वारा, जी.श्रीनिवास मूर्ति द्वारा संपादित, द अड्यार लाइब्रेरी, मद्रास, 1953।
- वास्तुसूत्र उपनिषद, पवित्र कला में रूप का सार, बोनर, एलिस द्वाराय सरमा, आदिसिवरथय बाउमर, बेट्टीना, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1986 ख्पहला संस्करण। 1982 जे.
- केएन पणिक्कर, ''पूर्व औपनिवेशिक भारत में सांस्कृतिक रुझानः एक अवलोकन'' औपनिवेशिक भारत में विज्ञान के सामाजिक इतिहास में। ईडी। एस. इरफान हबीब, ध्रुव रैना और जहीर बाबर। ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007।
- कुल्के, हरमन और डाइटमार रॉदरमुंड, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया। लंदनः रूटलेज, 2016।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

गोविन्द सेन
(प्रोफ.) डॉ. दिनेश मंडोत

*****